श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीयोऽध्यायः) 10/7/2020

श्लोकसंख्या 13

"देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥"

हिन्दीअनुवाद

इस शरीर में देह धारण करनेवाले के जिसप्रकार कौमार्य अर्थात् बाल्यावस्था, यौवन ~~अर्थ~~ यानि युवावस्था तथा जरा ~~का~~ ~~अर्थ~~ (वृद्धावस्था) प्राप्त होते हैं। ~~इसीप्रकार~~ वैसे ही उनके देहान्तरों की प्राप्ति होती है, इस विषय में धीर (धैर्य धारण करनेवाला) पुरुष मोहित नहीं होते (मोह में नहीं पड़ते)।

भावार्थ -(क) बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था में आत्मा निर्विकार बनी रहती है। आत्मा में किसीप्रकार का बदलाव (परिवर्तन) नहीं होता।

(ख) देहान्तर में आत्मा एक शरीर को परित्याग कर दूसरे शरीर को धारण करती है। इसमें आत्मा में किसीप्रकार का विकार नहीं होता। आत्मा निर्विकार बनी रहती है। अतएव भीष्म तथा द्रोण आदि के शरीरान्तर रूपी मृत्यु से ~~मोहित~~ (धीर) अर्जुन को मोहित नहीं होना चाहिए। यही संदेश है।